राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं आभ्यान्तर संचार प्रक्रिया का विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ0 धर्मेन्द कुमार पटेल[1]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुख्य लक्ष्य हिन्दू समाज का सर्वागीण विकास करना है। हिन्दू समाज के विकास की प्रक्रिया को विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दू समाज की आधारभूत इकाई मनुष्य का विकास हो। इसीलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा स्वयंसेवको के छः आयामी विकास पर ध्यान मुख्य रुप से केन्द्रित किया गया है। इन छः आयामो में (1) शारीरिक, (2) बौद्रिक, (3) सेवा, (4) सम्पर्क, (5) प्रचार, (6) व्यवस्था के सन्दर्भ सम्मिलित हैं। यही ये आयाम है कि जिनके माध्यम से स्वयंसेवकों एवं हिन्दू समाज के विकास के आयाम विकसित हुये हैं। इन्ही आधारों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सम्पूर्ण संरचना निर्मित एवं विकसित हुई है। यही ये आयाम है जिनको राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व्यक्ति एवं समाज दोनों के विकास के जिए अपनाता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चूँकि एक अनोखा स्वयं सेवी संगठन है। इस कारण इसकी संरचनात्मक प्रक्रिया के साथ–साथ इसकी संचार प्रक्रिया का भी अध्ययन महत्वपूर्ण है। चूकि संचार एक व्यापक प्रक्रिया है तथा इसके विविध आयाम है। इस कारण संचार के समग्र रुपों को जानना आवश्यक है। संचार वह आधारभूत प्रक्रिया है जिसपर सम्पूर्ण मानव समाज का आधार टिका है। संचार को हम मुख्य रुप से निम्नलिखित भागों में विभक्त कर सकते हैं।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि संचार मुख्य रुप से (1) आभ्यान्तर संचार, (2) अन्तर्वैयक्ति संचार, (3)समूहसंचार, (4)जनसंचार, (5) अन्य संचार में विभक्त हैं। इसमें से आभ्यान्तर संचार की प्रक्रियॉ मनुष्य के अन्तस्थ में प्रवाहित होती है। शेष अन्य संचार का सम्बन्ध वाह्य परिवेश से है। चूँकि हम यहा आभ्यान्तर संचार का विश्लेषण कर रहे है इसलिए इसके विषय में भी जानना आवश्यक है।

आभ्यान्तर संचार

आभ्यान्तर संचार मानव समाज एवं विश्व के सभी संचारों का मुख्य आधार अथवा केन्द्र है। अब तक संचार के अध्ययन एवं अध्यापन में अन्य संचारों पर अधिक बल दिया गया परन्तु मूल संचार अथवा आधारभूत संचार के रुप में विद्यमान आभ्यान्तर संचार पर ध्यान नही दिया गया, जबकि इसकी प्रमुख आवश्यकता है। जितने भी सामाजिक विज्ञान

[1] प्राध्यापक (पत्रकारिता), महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, एन.टी.पी.सी.परिसर, शक्तिनगर,सोनभद्र (उ0प्र0)

अथवा अध्ययन की प्रणालियॉ हैं , उन सभी में आभ्यान्तर प्रक्रिया में उन विषय अथवा ज्ञान की द्विष्टि के विकास का प्रयास होता है , जिससे सम्बद्व विषय के अनुशासन का हदयंगम हो सके। मनुष्य एवं मानव समाज सदा से प्रभावी एवं कुशल आभ्यांतर संचार वाले लोगों का ज्ञान एवं सूाज के लिए उपयोगी माना। जिस व्यक्ति का आभ्यांतर संचार पूर्ण रुप बिखरा हैं , उस व्यक्ति को हम पागल की संज्ञा देकर ज्ञान जथा मानव समाज के लिए अनुपयुक्त घोषित कर देते हैं। इस प्रकार आभ्यान्तर संचार प्रमुख होने के साथ–साथ रहस्यवादी भी है। इसी रहस्य के अध्ययन के लिए मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विषय के रुप में स्थापित है।

भारतीय मनीषा ने आभ्यान्तर संचार की प्रक्रिया को समझने के प्रयास के साथ–साथ आभ्यान्तर संचार प्रक्रिया को सुधारने तथा इसके विकास का प्रयास किया जिसके परिणाम स्वरुप,योग,साधना आदि का विकास हुआ। संचार की इस व्यवहार प्रक्रिया के आधार पर हम इसे भौतिक एवं अभौतिक अथवा अन्तः एवं वाह्य रुपो में विभाजित कर सकते हैं:

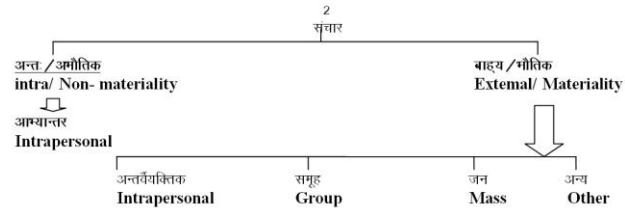

इससे स्पष्ट है कि आभ्यान्तर संचार ही वह ऊर्जा है , जिससे जुड़कर अन्य संचार संचालित होते हैं। इस वाह्य जगत के संचारों के अलावा आभ्यान्तर संचार के द्वारा सूक्ष्म जगत् के जो रहस्य है अथवा जो ज्ञान है उसका भी ज्ञान हमें होता है आभ्यान्तर के विकास की अवस्था में मनुष्य संचार के गुड़ रहस्यों को आत्मसात करता है। आभ्यान्तर संचार का चरम उस ईश्वर अथवा जगत कर्ता तक ले जाता है जिसने विश्व की सृष्टि किया है। इस कारण हम कह सकते हैं कि आभ्यान्तर संचार की परायात्रा में मनुष्य जगत् नियंता एवं परमेश्वर की विराटता को प्राप्त करता है। इसके विपरीत भौतिक जगत् में आभ्यान्तर संचार के द्वारा जन संचार से जुड़–कर व्यापक समाज की विराटता से जुड़ जाता है। इससे स्पष्ट है कि आभ्यान्तर संचार ही मनुष्य की व्यापकता तथा विराटता का आधार है।

जब संचार अध्ययन का विकास आरम्भिक अवस्था में था , उस समय पत्रकार अथवा पत्रकारिता को जन्मजात गुण की सज्ञा दी जाती थी। वर्तमान में भी कुछ सत्य इसके करीब है। वर्तमान समय मे ं अथवा पत्रकारिता प्रशिक्षण के जो विविध केन्द्र हैं वे सभी कैसे लिखे अथवा प्रस्तुत करें ? इसका ही प्रशिक्षण देते हैं। लेकिन क्या लिखें ? इसका प्रशिक्षण नही देते , क्योकि यह प्रश्न सीधे आभ्यान्तर संचार से जुड़ा हुआ है। इसी आभ्यान्तर संचार की भिन्नता के कारण एक पत्र के सम्पादकीय या लेखन अन्य से भिन्न होते हैं। यही नही एक ही साथ काम करने वाले पत्रकारों में आभ्यान्तर संचार की भिन्नता के कारण उनके व्यवहार , लेखन , कार्यशैली , द्वष्टि आदि में अन्तर आ जाता हैं। हम साक्षात्कार अथवा परीक्षा के आधार पर मनुष्य के इसी आभ्यान्तर संचार

प्रकिया के आकलन और मूल्यांकन का प्रयास करते है।[3]

आभ्यान्तर संचार की प्रकिया बडी व्यापक तथा रहस्यपूर्ण है। आभ्यान्तर में ही पूरा विश्व , ज्ञान , दर्शन एवं सम्बन्ध निवास करते है। आभ्यान्तर संचार के द्वारा ही मनुष्य में हर्ष एवं विषाद आदि व्यक्त होते है। आभ्यान्तर संचार के द्वारा ही मनुष्य नये–नये ज्ञान एवं चिन्तन को भी देखता है। आभ्यान्तर संचार के द्वारा ही मनुष्य समान एवं सम्बन्धों से जुड़ा रहता है मनुष्य के सम्बन्ध वाह्य जगत में नही वरन् मनुष्य के अभयान्तर में विद्यमान रहते है। इसी कारण पागल मनुष्य एवं उसके सम्बन्धी तथा समाज रहता है लेकिन आभ्यान्तर की विसंगति के कारण पागल के लिए समाज , विश्व सम्बन्ध और ज्ञान या तो रहते नही यदि कुछ अंश तक रहते भी है तो सामान्य मनुष्य से भिन्न रुप में। इस प्रकार स्पष्ट है कि आभ्यान्तर संचार मुख्य है। मनुष्य विदेश अथवा दूरस्थ रहकर भी अपनी आभ्यान्तर संचार प्रकिया के द्वारा अपने परिवार तथा सम्बन्धियों से जुड़ा रहता है। इस कारण आभ्यान्तर संचार को समझना आवश्यक है।[4] हमारे मस्तिष्क एवं हृदय का नियंत्रण हमारे ही आभ्यान्तर द्वारा ही किया जाता है।इस पर अतीत एव्र वर्तमान का प्रभाव प्रभावित करते हैं। मनुष्य एवं मानवसमाज निरंतर इस प्रयास में है कि आभ्यान्तर संचार की प्रकिया को समझा जा सके। भाषा , लिपी , व्याकरण , व्यवहार ,उत्तर–प्रयुक्तर सभी वास्तव में आभ्यान्तर संचार की देन है। सम्पूर्ण विश्व साहित्य आभ्यान्तर संचार का ही उत्पादन है। इस कारण वर्तमान समय में इस संचार प्रकिया को जानना समझना आवश्यक है। आभ्यान्तर संचार प्रकिया वाह्य संचार में एस (S) आर (R) के माध्यम से व्याप्त होती है। एस (S) अर्थात उद्दीयक (Stimulus) एवं आर (R) अर्थात Response उत्तर प्रकिया। इस संचार प्रकिया को संचालित करने के मुख्य आधार है। इस प्रकार हम कह सकते है कि द्वन्द अथवा परस्पर विरोधी प्रवित्तियों के द्वारा आभ्यान्तर संचार की कडी आगे बढती है। इसी सिद्वान्त को कम्प्यूटर में भी अपनाया गया है। परस्पर दो विराधी अवस्थाओं 'हाई'और 'लो' (0 एवं 1) की प्रकिया से कम्प्यूटर एवं मनुष्य के बीच सीधा सम्पर्क होता है। इसे हम कम्प्यूटर की भाष में बाइनरी की सज्ञा देते है। इससे भी स्पष्ट है कि मनुष्य के आभ्यान्तर संचार की तर्ज पर विकसित संगणक में भी द्वन्द्वात्मक प्रकिया कार्य का प्रमुख आधार है।[5]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की योजना के छः मूल आधार

(1) शारीरिक (2) बौद्विक (3) सेवा (4) सम्पर्क (5) प्रचार एवं (6) व्यवस्था का सम्बन्ध मुख्य रुप से स्वयंसेवको के अन्तःकरण से जुड़ी प्रकिया से है। चूँकि इन छः व्यवहारों का प्रशिक्षण एवं इसके अनुसार कार्य का केन्द्र स्वयंसेवकों का अन्तःकरण है। इसलिए इस छः आयामी अन्तस्थ व्यवहार प्रकिया को जानना जरुरी है।

छः अन्तस्थ प्रकियाएँ:

सामान्य रुप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा सीधे छः प्रकार की कार्य–योजनाओं का संचालन किया जाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक सध के संविधान के अधिकरण 18(क) में जिन क्षेत्रों का वर्णन है– उसमें शारीरिक क्षेत्र, बौद्विक क्षेत्र, प्रचार क्षेत्र, व्यवस्था क्षेत्र, सम्पर्क क्षेत्र एवं सेवा क्षेत्र के प्रमुखो का उल्लेख है।[6] इससे यह स्पस्ट होता है कि ये छः कार्यक्षेत्र है जिनका नियोजन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संध द्वारा किया जाता है। लेकिन वास्तव में उक्त छः क्षेत्रो का सम्बन्ध कार्यकर्ताओं के अन्तः करण प्रकियाओं से जुड़ा हुआ है जिसे हम इस प्रकार समझ सकते हैं।

(1) शारीरिक द्वष्टि आभ्यान्तर संचारः

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपने प्रशिक्षण एवं कायप्रणाली के द्वारा स्वयंसेवको में ऐसा गुण विकसित करता है जिसके द्वारा उनमें शारीरिक द्वष्टि से एक समर्थवान प्रकिया विकसित हो सके। इसके लिये विभिन्न प्रकार के खेलो, व्यायामो तथा अन्य व्यूह रचना, योजनाओ का अभ्यास कराया जाता है। जिसके द्वारा स्वयंसेवकों में ऐसी अभी रुचि एवं अन्तः द्वष्टि का विकास होता है। जिसके कारण वे अपनी अन्तः शारीरिक एवं वाहन शारीरिक संचना के विकास एवं सुरक्षा की दृष्टि से सचेत तथा निर्भय बनते है। इस तरह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा शारीरिक नियोजन से जुड़े कार्यक्रम आभ्यान्तर संचार से जुड़े है।

(2) बौद्विक दृष्टि से आभ्यान्तर संचार :

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभिन्न कार्यक्रमों में बौद्विक एक भाग है। इसका लक्ष्य कार्यकर्ताओं के अन्तः करण में बौधिक क्षमता का विकास करना है अर्थात इस प्रकार के प्रशिक्षण से राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के सेवको के अन्तः करण में यह प्रकिया विकसित होती है। जिसके कारण वे समाज में विभिन्न समस्याओ पर अपना दृष्टिकोण रख सकते हैं।

चुँकि यह सर्वज्ञात प्रकिया है कि यदि व्यक्ति के अन्तःकरण में ज्ञान एवं विवेक का संचार नही होगा तो वह उत्तर– प्रतिउत्तर नही प्रस्तुत कर सकता। इस प्रकार बौद्विक नियोजन का सम्बन्ध आभ्यान्तर संचार से है।

(3) सेवा दृष्टि के द्वारा आभ्यान्तर संचारः

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा स्वयंसेवको में सेवा भाव विकसित करने का कार्य किया जाता है जिसकी वाह्य अभिव्यक्ति सेवा कार्यो के माध्यम से प्रकट होती है। परन्तु उसके प्रशिक्षण का अर्थ यह होता है कि इस प्रकिया के द्वारा स्वयंसेवको के अन्तःकरण में इस प्रकार का भाव पैदा किया जाय जिसक आधार पर वे सहज रुप से सेवा भाव युक्त हो सके। चूँकि सेवा कार्य बाध्य कारी नही होता इस लिये सेवा कार्य हेतु सेवा द्वष्टि का विकास आवश्यक है। जिसके बिना सेवा कार्य सम्पादित नही हो सकते। इस प्रकार सेवा नियोजन भी मनुष्य के आभ्यान्तर संचार से जुड़ा हुआ है।

(4) सम्पर्क दृष्टि के माध्यक से आभ्यान्तर संचारः

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य योजना का प्रमुख अंग सम्पर्क है। लेकिन सम्पर्क प्रकिया तभी संचालित हो पाती है जबकी मनुष्य के अन्तःकरण में सम्पर्क का भाव विद्यमान हो। इसीलिये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपनी कार्य प्रकिया के द्वारा स्वयंसेवकों में यह भाव विकसित करता है जिसके द्वारा स्वयंसेवकों में सम्पर्क की एक स्वतः स्फूर्ति विकसित होती है। संकोच एवं लज्जा से रहित सम्पर्क नियोजन की दखता प्राप्त करता है। इस प्रकार इसका भी सम्बन्ध आभ्यान्तर संचार से है।

(5) प्रचार दृष्टि के माध्यम से आभ्यान्तर संचारः

राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ की कार्यप्रणाली का आधार प्रचार भी है लेकिन वर्तमान समय में भ्रम वश प्रचार का आशय जनमाध्यमो के प्रचार–प्रसार से जोड़ दिया जाता है। जबकि प्रचार का उद्देश्य वास्तव में सही सूचना के विस्तार से जुड़ा होता है। अतः प्रचार का उद्देश्य केवल सूचना को विभिन्न यान्त्रिक प्रकियाओं अथवा मनुष्यों के द्वारा फैलाने से ही पूरा नही होता वरन् इसके लिये स्पष्ट दृष्टि का होना आवश्यक है। प्रचार करता व्यक्ति में यह गुण होने आवश्यक है कि वह किसी समस्या के सन्दर्भ में तथ्यों को व्यवस्थित ढंग से समग्रता के साथ प्रस्तुत कर सके जो कि मनुष्य के अन्तः प्रकिया से

जुडा है। इसलिये प्रचार का भी सम्बन्ध मनुष्य के अन्तःकरण से है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचार का उद्देश्य का केन्द्रीय तत्व स्वयंसेवकों में प्रचार दृष्टि का निर्माण करना है। जिसके द्वारा स्वयंसेवक अपनी बातों को कुशलता पूर्वक लिख सके, बोल सके तथा समाज में प्रक्षेपित कर सके। इस तरह यह भी मनुष्य के अन्तःकरण से जुड़ा व्यवहार है जिस दृष्टि के माध्यम से आभ्यान्तर संचार प्रकिया को प्रवाहित करता है।

(6) व्यवस्था दृष्टि के माध्यम से आभ्यान्तर संचार :

सामान्य रुप से व्यवस्था का आशय कार्यालयी व्यवस्था से ही लिया जाता है। लेकिन एक स्वयंसेवी संगठन के सन्दर्भ में यह तथ्य सार्थक नही प्रतीत होता क्योकि व्यवस्था भी अन्तःकरण की प्रकिया से जुडी है। यदि व्यक्ति में व्यवस्था दृष्टि का विकास हो तभी वह व्यवस्था नियोजन कर सकता है। इसलिए व्यवस्था द्वष्ट्रि भी आभ्यान्तर संचार की प्रकिया का अंग है।[7]

निष्कर्ष

आभ्यान्तर संचार मानव समाज एवं विश्व के सभी संचारों का केन्द्र है। यह समस्त सामाजिक विज्ञानों का मूल आधार है। आभ्यान्तर संचार प्रकिया का विकास मनुष्य योग साधना आदि प्रकिया के द्वारा कर सकता है। आभ्यान्तर संचार के द्वारा प्रकिति के सूक्ष्म रहस्यों का भी ज्ञान होता है। सम्पादकीय लेखन अथवा पत्रकारिता व्यवहार का भी मुख्य आधार आभ्यान्तर संचार ही है। आभ्यान्तर संचार के द्वारा मनुष्य नये–नये ज्ञान एवं चिन्तन को प्राप्त करता है। मनुष्य भाषा , लिपि , व्याकरण , उत्तर–प्रतिउत्तर आदि का सम्पादन आभ्यान्तर संचार के द्वारा करता है। आभ्यान्तर संचार में अन्तःकरण एवं बाह्य करण दोनो का महत्व होता है। इसी के आधार पर संचार प्रकिया का संचालन सुनिश्चित होता है। सम्पूर्ण विश्व साहित्य एवं ज्ञान–विज्ञान आभ्यान्तर संचार पर ही आधारित है। राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ द्वारा विविध कार्यक्रमों के माध्यम से आभ्यान्तर संचार प्रकिया को अपनाया जाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा प्रतिदिन आयोजित होने वाली एक घण्टे की शाखा के सभी कार्यक्रमों का सम्बन्ध आभ्यान्तर संचार प्रकिया से होता है इन कार्यक्रमो में सूर्य नमस्कार और बौद्विक कार्यक्रमों का सम्बन्ध आभ्यान्तर संचार से है क्योकि सूर्य नमस्कार जिन मंत्रों एवं आसनों से जुड़कर सम्पन्न होता है वे सभी आभ्यान्तर संचार से युक्त होते हैं। योगासन वर्तमान समय में विश्व में प्रचलित आभ्यान्तर संचार प्रकिया के आयामों से जुड़ा है। योगासन संघ की शाखाओं के दैनिक कार्यक्रमो का एक भाग है । इसी के साथ–साथ 'ऊँ' का उच्चारण तीन बार किया जाता है कि आभ्यान्तर संचार प्रकिया विकसित एवं बलवती होती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ द्वारा प्रकाशित शाखा पुस्तिका के द्वारा स्वयसेवको के आभ्यान्तर में विशेष प्रकार के संस्कार सम्प्रेषित किये जाते है। शाखा पुस्तिका पश्चिम में प्रचलित पुस्तक चिकित्सा प्रणाली के अनुरुप एवं वैज्ञानिक है। इससे सघ के स्वयंसेवको की आभ्यान्तर संचार प्रकिया पुष्ट एवं विकसित होती है। इस प्रकार आभ्यान्तर संचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ की कार्यप्रणाली का अंग है।

इस प्रकार इस शोध पत्र की अध्ययन वस्तु से स्पस्ट है कि आभ्यान्तर संचार प्रकिया का उपयोग राष्ट्राय स्वयंसेवक संघ की कार्य प्रणाली एवं व्यवहार प्रकिया का आवश्यक अंग हैं।

सन्दर्भ

1. सिंह ओम प्रकाश , संचार के मूल सिद्वान्त क्लाासिकन पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली 2002 पृष्ठ–11
2. वही, पृष्ठ : 73–74
3. वही, पृष्ठ : 75
4. वही, पृष्ठ : 75
5. वही, पृष्ठ : 76
6. राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ का संविधान पृष्ठ : 8–9
7. शाखा पुस्तिका , युगााब्द 5103 , नागपुर , पृष्ठ : 2–9